3.9.67 ओमशांति रात्रीक्लास

क्लास में बच्चों को क्या सुनाया?(सर्विस का समाचार) सर्विस समाचार किसने सुनाया?किसने सुना?जीवात्मा ने सुनाया ,जीवात्माओं ने सुना। यह ज्ञान आत्माओं को भी सुनाने वाला है बाप। तुम सभी को आत्मअभिमानी होकर बैठना है। आत्माओं को भी बाप ही से वर्सा मिल रहा है फिर से। बाप आते हैं भारत में। बेहद का बाप जो कि आत्माओं का बाप शिव है। आत्माओ (आत्माएं)सभी भाई2 हैं। एक ही बाप आकर भारत को फिर से स्वर्ग बनाते हैं। स्वर्ग कहो ,सुखधाम कहो वा हेविन कहो, बहिश्त कहो। भारत ही बहिश्त भी था। स्वर्ग भी कहते थे। वैकुंठ भी कहते थे। पैराडाइज भी कहते थे। उस समय भारत सतोप्रधान था। यह देवी देवताएं ही थे बाकी अन्य कोई भी धर्म नहीं था। अब अनेक धर्म हुए हैं। कलियुग है ना। पावन बदले पतित अपवित्र हैं। स्वर्ग के बदले नर्क हैं। हेविन के बदले हेल है। सतयुग की है महिमा। कलियुगी की है ग्लानी। यह सारा खेल समझाया जाता है। बच्चों को बाप समझाते हैं। फर्रुखाबाद में बाप को मालिक कहा जाता है। बाप एक ही है। सबका बाप। बेहद के बाप से भारत को स्वर्ग का वर्सा मिलता है। बाकी सभी को मिलती ही है मुक्ति। इन देवी देवताओं के राज्य को ही जीवनमुक्ति कहा जाता है और स्वर्ग भी कहा जाता है। स्वर्ग है तो चंद्रवंशी नहीं है। भारत में ल.ना. का राज्य था तो सूर्यवंशी कहा जाता था। 84जन्म भी यही लेते हैं। यह राज्य स्थापन हुआ बाप से। कृष्ण से नहीं। कृष्ण को मालिक वा (बाप) नहीं कहा जा सकता है। यह बड़ी भूल है। कृष्ण को तो कोई भी धर्मवाला बाप नहीं कहेंगे। .....बच्चों को समझाया जाता है कि कृष्ण को ही गोरा और सांवरा कहते हैं। कृष्ण की आत्मा पवित्र सतोप्रधान है तो वो गोरा है। फिर 84जन्म लेते काम चिक्षा पर बैठ सांवरा बन जाते हैं। यह चक्र कैसे फिरता है वो समझने का है। यह रचता और रचना का ज्ञान जानने से आस्तिक बन जाते हैं। भारत धणी.....कर्म करेंगे तो ईश्वर धर्मराज द्वारा बहुत सजा देंगे। इसलिए डर रहता है। .....तुम बच्चे अभी कर्म, अकर्म,विकर्म की गति को समझते हो। जानते हो यह कर्म–अकर्म हुआ। याद में रह जो कर्म करते हैं वह अच्छी होती है। रावण राज्य में मनुष्य बुरे काम ही करते हैं। रामराज्य में कब बुरा काम होता न है। अब श्रीमत तो मिलती ही रहती है। कहां बुलावा होता है, यह करना चाहिए वा न करना चाहिए। हर बात में पूछते रहो। समझो कोई को गोली चलानी होती है ,वह तो करना ही पड़े। ऐसे थोड़े ही है पुलिस कैसे कहेंगे कि गोली नहीं मारो। जरूर मारना ही पड़े ;परंतु पहले प्यार से समझाओ। आर–प्यार–मार होती है ना। वह पुलिस लोग तो मार से ही समझाने की कोशिश करते हैं। आर–प्यार से काम करना चाहिए। सच्ची न करे तो फिर मार–प्यार से समझाने से हाथ आ सकते हैं ;परंतु उस प्यार में भी योगबल भरा हुआ होगा तो योग की ताकत से कोई भी समझाने से समझेंगे। यह तो जैसे ईश्वर समझाते हैं। तुम ईश्वर के बच्चे योगी हो ना। तुम्हारे में ईश्वरीय ताकत है। ईश्वर प्यार का सागर है। तुम जानते हो ....में प्यार बहुत होता है। अन्याय की कोई बात ही नहीं होती। अब तुम प्यार का पूरा वर्सा ले रहे हो। लेते2 पुरुषार्थी करते2 फिर नम्बरवार प्यारे बन जावेंगे। बाप कहते हैं किसको भी दुःख नहीं है। नहीं तो दुःखी हो मरेंगे। बाप प्यार का रास्ता बताते हैं। मंसा में आने से ही सिकल में भी आ जाता है। कर्मइन्द्रियों से कर लिया तो रजिस्टर खराब हो जावेगा। कैरेक्टर खराब हो जावेगा। देवताओं की .....का भी गायन है ना। इसलिए बाबा कहते हैं देवताओं के पुजारियों को समझाओ। वह महिमा गाते हैं आप सर्वगुण सम्पन्न और अपनी चाल चलगत भी सुनाते हैं। अपन को अगेन्स्ट.....उनको समझाते तुम ऐसे थे। अब नहीं हो फिर होंगे जरूर। तुमको ऐसा देवता बनना है। अपनी चाल ऐसी अच्छी रखो तो तुम यह बन जावेंगे। अपनी जांच करनी है हम सम्पूर्ण निर्विकारी हैं कि हमारे में (अधूरी मुरली है)